उ.प्र. हिन्दी संस्थान द्वारा 'धर्मयुग सर्जना पुरस्कार' से सम्मानित

मूल्य : ₹ 50/-

वर्ष 19 - सितम्बर-दिसम्बर 2025

संपादक : कृष्ण बिहारी

निकट-42

संस्मरण विशेषांक

अलक्षित रह गए पर बस गए हो तुम

मनीष वैद्य का रचना संसार

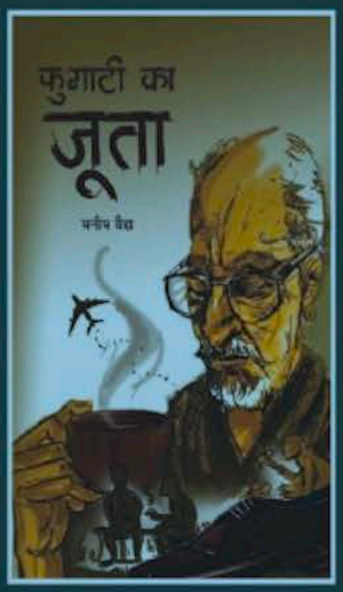

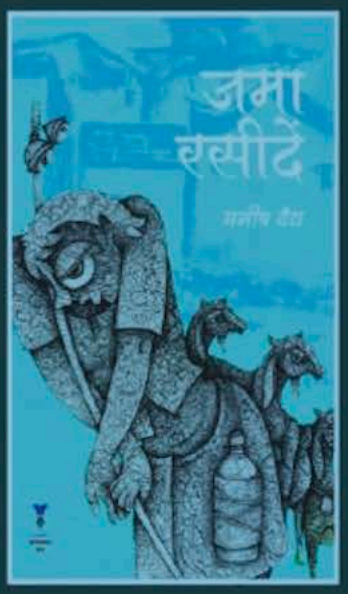

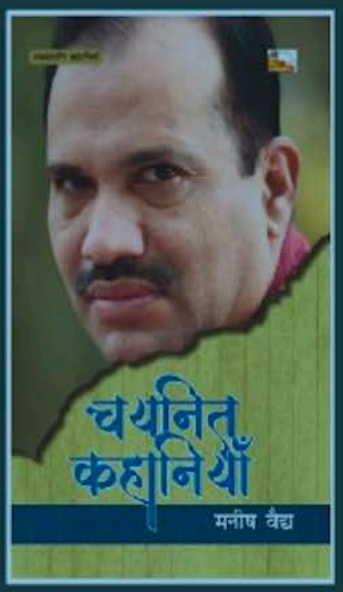

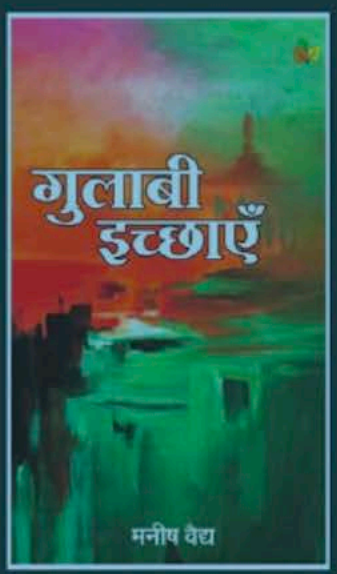

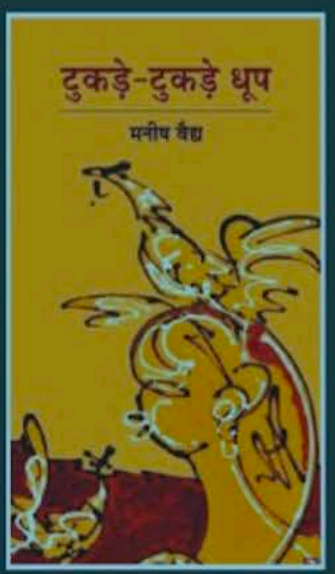

निकट

संयुक्त अरब इमारात से शुरू, अब भारत से प्रकाशित

कथा प्रधान त्रैमासिकी, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान द्वारा धर्मयुग सर्जना पुरस्कार से सम्मानित

वर्ष : 19, अंक-42, सितंबर-दिसंबर 2025
Editor: Krishna Bihari
HIG-46, B Block, Panki
Kanpur-208020
mobile: 6307435896
email: krishnatbihari@yahoo.com

प्रति रुपए 50/-
वार्षिक रुपए 500/-
तीन वर्ष रुपए 1500/-
(डाक खर्च अलग से)
भुगतान ऑन लाइन या सीधे बैंक में भी जमा कर सकते हैं :

बैंक : बैंक ऑफ बड़ोदा
खाता संख्या : 28050100010192
खाता धारक : Krishna Behari Tripathi
आई एफ एस सी : BARB0SAPRBS
बैंक शाखा : सराय मसवानपुर ब्रांच, कानपुर
उत्तर प्रदेश

6307435896@ybl

भारती भाषा संवर्धन संस्थान
द्वारा सहयोग प्राप्त

सर्वाधिकार : सुरक्षित
प्रकाशित सामग्री के लिए लेखक और प्रकाशक की अनुमति आवश्यक है। प्रकाशित रचनाओं के विचार से प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं। किसी प्रकार के विवाद लखनऊ न्यायालय में विचारणीय।
मुद्रक : अमन प्रकाशन, 104-ए / 80-सी, कानपुर, (उ. प्र.) मो.- 9044344050

निकट पत्रिका से संबन्धित सभी पद अवैतनिक
संपादक, स्वामी कृष्ण बिहारी, एच आई जी-46,पनकी बी ब्लॉक, कानपुर-208020 से प्रकाशित।

निकट

संस्थापक – अशोक कुमार

संपादक – कृष्ण बिहारी

उप संपादक

धनंजय कुमार सिंह

भूपेन्द्र कुमार सिंह

सहयोगी

राधेश्याम यादव

राम नारायण त्रिपाठी

व्यवस्थापक

अभिनव त्रिपाठी

कानूनी सलाहकार

राजेश तिवारी एडवोकेट

2/241, विजयखंड, गोमती नगर

लखनऊ

आवरण

डॉ. पारुल तोमर

रेखांकन

शशि भूषण बडोनी

अगला अंक निकट - 43,
आत्मकथात्मक प्रेमकथा विशेषांक
जनवरी-अप्रैल 2026

इस अंक में -

संपादकीय : समय से बात –
राजनीतिक अशालीनता चरम पर है -03
पिछले अंक की प्रतिक्रिया –
निकट-41, कहानियाँ भर नहीं - **अशरफ अली** -06
संस्मरण
गण्डक नहर की लहरों की ब्रेल लिपि - **अमरीक सिंह दीप** -07
चमड़ी जाये पर दमड़ी न जाये - **सुषमा मुनीन्द्र** -12
मुझे किश्त भरनी है - **गजेंद्र रावत** -15
मेरी चेतना की पहली रोशनी - **अपूर्व जोशी** -16
वह स्कूटी वाला - **पंकज सुबीर** -18
आज भी याद है वह चेहरा - **कौशल पाण्डेय** -21
शिला तो अहिल्या को ही होना पड़ता है - **मनीष वैद्य** -22
मनम् राक्षसी कादू - **दीपक मिश्रा** -24
छोटे मास्साब - **रजनी गुप्त** -28
आस्था-अनास्था के बीच - **निर्देश निधि** -30
अप्रत्याशित - **अशोक गुजराती** -36
पके अन्न की महक और कलेजे की टीस - **निर्मला डोसी** -38
इस सफर का वो इक मुकाम था... - **आरती 'आस्था'** -41
वो सुकून था कि मलाल... - **विज्ञान भूषण** -44
बैजू सितारिया से बैजू बावरा बनने... - **अरुणेन्द्र नाथ वर्मा** -48
एक शिक्षक का जाना - **चितरंजन भारती** -53
सुरों के स्वस्तिवाचक: पंडित जी - **डॉ. राकेश शुक्ल** -60
बीरबल - **डॉ. पारुल तोमर** -63
देर से ही सही - **शशि श्रीवास्तव** -69
मनुष्य का सन्त हो जाना - **अमिता दुबे** -71
मुसलसल ईमान - **लता शर्मा** -74
एक स्वप्नजीवी का जाना - **धनंजय सिंह** -79
विचारों की सहर - **भूपेन्द्र कुमार** -83
ग़रीब - **प्रियंका गुप्ता** -86
कर्तव्य की भूमिका - **शेख़ शहज़ाद उस्मानी** -87
क्या करेंगे नाम जान कर...? - **रियाज़ अहमद** -89
वो जो सफ़र में मिला था – **व्यंकटरमण** -91
दुबकी हुई मोहब्बत - **डॉक्टर इरफान खान** -93
समीक्षा
ज़िंदगी में उजास भरने वाले, हमारे अपने - **राकेश शुक्ल** -94
काव्य संग्रह 'रथ के धूल भरे पांव' की समीक्षा - **अरविन्द यादव** -95
"नई सदी की हिन्दी कविता का दृष्टिबोध" –
अजीत कुमार राय पर एक पाठकीय टिप्पणी - **विवेक चतुर्वेदी** -97
'मां हो जाना' (काव्य-संग्रह) - **विनय श्रीवास्तव** -98
पत्रिका परिचर्चा –
अक्षत का सातवां अंक - **अर्पणा पांडेय** -43
विशेष
सउदी अरब एवं यूएई से छह छात्रों के संस्मरण

संपादकीय

समय से बात

राजनीतिक अशालीनता चरम पर है

संसद का मानसून सत्र शुरू हुए आज आठवाँ दिन है। जो कुछ सत्र शुरू होने के बाद से अब तक देखा गया वह निहायत अफसोसनाक और निराशाजनक है। सत्ता और विपक्ष इस बात से नितांत अपरिचित है कि करदाता के पैसों का कितना दुरुपयोग उनके द्वारा किया जा रहा है। असल में यह उनके खून पसीने की कमाई नहीं है। अगर किसी दिन लोकसभा या विधानसभाओं में यह बिल लाया जाए कि सांसदों और विधायकों को वेतन और सुविधाएं देने के लिए विचार किया जाएगा तो मुर्दा सांसद और विधायक भी एकता का शानदार (वीभत्स)उदाहरण प्रस्तुत करेंगे। कोई मतभेद नहीं होगा। इसके अलावा इनमें एकता के दर्शन हमें और आपको कभी दिखाई नहीं देगा।

सरकार और विपक्ष पिछले तीन महीनों से जो कुछ संसद के बाहर कह – सुन रहे हैं, वही संसद के भीतर भी सुनने को मिला। होना तो यह चाहिए था कि ऑपरेशन सिंदूर पर विपक्ष को जो कुछ अर्गल अनर्गल पूछना था वह सभी विपक्षी दल एक साथ बैठकर तय कर लेते और नेता विपक्ष उन सभी सवालों को सरकार से पूछता, सरकार की ओर से रक्षा मंत्री विपक्ष के सवालों के जवाब देते। उनकी शंकाओं का निराकरण करते लेकिन ऐसा नहीं हुआ क्योंकि इसकी परंपरा ही नहीं है। सभी विपक्षी दल हर पाँच वर्ष में एक बार किसी अरण्य में बैठकर अपनी सामूहिक एकता का विद्रूप प्रदर्शन करते हैं। उन्हें और उनका अभिनय देखकर लगता है कि दशरथ के चारो पुत्रों की तरह इनमें कितना सुंदर भाईचारा है ! मगर कुछ ही पलों में इन सबको महाभारत का पात्र बनते देख देश की जनता समझ लेती है कि इनके रिश्ते कितने अपवित्र हैं।

पिछली दो लोकसभाओं में नेता विपक्ष का पद खाली रहा। इस बार कांग्रेस को 99 सीट क्या मिली, उसने खुद को त्रिलोकीनाथ समझ लिया। नेता विपक्ष की भूमिका राहुल गांधी को मिली। मिलनी ही थी। कांग्रेस भी अब उन्हीं क्षेत्रीय राजनीतिक दलों की तरह हो गई है जिनमें वंशानुगत डीएनए शुद्धता की निशानी और कुर्सी बपौती है ! बहरहाल आज राहुल गांधी नेता विपक्ष हैं। नेता विपक्ष में जो संयम, समस्याओं की समझ, तार्किकता और धैर्य होना चाहिए, वह उनमें बिलकुल नहीं है। उनकी चाल, उनका पहनावा, उनका आचरण कहीं से भी उन्हें नेता नहीं बना रहा। न जाने क्यों उनके साथी उन्हें यह बता पाने में विफल हैं ? राहुल गांधी का आचरण एक आक्रामक, दुर्विनीत और मसल पावर प्रदर्शक का होता जा रहा है जो कहीं से भी उन्हें शालीन नहीं बनाता। कमोवेश यह आचरण तो अधिकांश सांसदों और विधायकों का है लेकिन नेता विपक्ष से देश इस तरह की उम्मीद नहीं करता। हर बात में प्रधानमंत्री को कोसना और जानबूझकर उनके गले पड़ना उन्हें हास्यास्पद बना रहा है। विरोध की अपनी भाषा होती है। मेज़ पर घूंसा मारते हुए आप खुद को नहीं अपने उस गुस्से का ही प्रदर्शन करते हैं जिससे कुंठा प्रकट होती है। उन्हें यह समझने में कितना वक़्त लगेगा कि प्रधानमंत्री की कुर्सी लोकतन्त्र में बपौती नहीं होती। उनका मोदी विरोध उनके प्रवक्ताओं, चमचों और तथाकथित सलाहकारों को भी इतना अशालीन बना रहा है कि उनकी शक्ल भी किसी को अच्छी नहीं लगती। बाईस अप्रैल के बाद विपक्ष के सवाल कि सुरक्षा चूक क्यों हुई ? अपराधी कहाँ गए ? क्यों नहीं पकड़े या मार गिराए गए ? हमारे कितने जेट गिरे ? गिरे तो क्यों गिरे? अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप ने अब तक 29 (अब तक 36) बार क्यों कहा कि उनकी मध्यस्तता से युद्ध विराम हुआ ? प्रधानमंत्री मोदी सभी सवालों के जवाब क्यों नहीं देते? आदि-आदि प्रश्न सभी विपक्षी दलों द्वारा पूछे गए। सरकार में जिम्मेदार पदों पर बैठे लोगों ने इन सभी सवालों के जवाब संसद के बाहर दिये थे और संसद में भी देने का भरोसा दिया था मगर जब विरोध करना ही उद्देश्य हो तो वही हुआ जो पहले से तय था। इसी प्रकरण को संसद में भी दुहराया गया। आठ दिन का समय बर्बाद हुआ। यह लोकतन्त्र की उपलब्धि रही। जब मैं यह संपादकीय लिख रहा हूँ उस वक़्त तक यह ख़बर भी आ गई कि पहलगाम के हत्यारे मारे गए। और अब, विपक्ष का प्रश्न है कि हत्यारे आज ही क्यों मारे गए ! बलिहारी है !

इस सोच को क्या कहेंगे ?

सत्ता पक्ष जब विपक्ष की भूमिका में आता है तो उसे कुछ समय तक यकीन ही नहीं होता कि मतदाता ने उसे अस्वीकार कर दिया है। उसे मतदाता मूर्ख लगता है। हारने के बाद मैंने प्रायः सभी क्षत्रपों को पहला बयान यही देते सुना है कि मतदाता... है। बाद

में वक्तव्य आता है कि जनता जनार्दन का निर्णय सिर माथे। असल में वह चुनाव आयोग का निर्णय स्वीकार करता है। उस जनता से तो वह बदला लेने की कुचक्री योजना बनाता है कि जिन लोगों ने उसे वोट नहीं दिया है। वह पता लगाता है कि किन लोगों ने उसे वोट नहीं दिया। उनके साथ वह भविष्य में किस तरह पेश आएगा, इसकी चिंता में घुलता है। जब वह चुनावी भाषणों में कहता है कि जनता सब जानती है तब यह नहीं जानता कि जनता सब जानती है। एक नैरेटिव बनाया गया है कि 2014 के बाद यह देश रहने लायक नहीं रह गया। एक मशहूर और कुख्यात शायर (अब दिवंगत) ने कहा था कि योगी जीत जाएँगे तो वह देश छोड़ देगा। योगी जीत गए और उस शायर ने देश नहीं छोड़ा। इसी तरह एक और शायर ने कहा कि हिंदुस्तान किसी के बाप का नहीं है। उन्हें शायद नहीं पता था कि हिंदुस्तान हर भारतीय के बाप का है। वे भी दुनिया छोड़ गए। एक लब्भड़ पत्रकार जो विपक्ष में बुद्धिजीवी का तमगा लटकाए हुए जीते हैं और इन दिनों हेल के मारे बेल बने हुए हैं, कहा था कि मोदी कभी चुनाव नहीं जीत सकते ; हाँ, संसद में चाय पिलाने वाले का काम ज़रूर कर सकते हैं। मोदी जीत गए तो वह न जाने क्या कर बैठेगा। वह पत्रकार अब इस तरह बैठ गया है कि उससे उठा नहीं जा रहा। इस नैरेटिव को बनाने वाले कि देश अब रहने लायक नहीं रह गया, इसी देश में हैं और यहीं मर भी रहे हैं। ये कौन लोग हैं ? ये वही लोग हैं जिनकी छाती पर साँप लोट रहे हैं। जिनके शरीर की चर्बी मलाई बिना गल रही है। किसी जमाने में लाल हुए गाल पिचक गए हैं। इन्होंने 2014 के बाद यह कभी नहीं सोचा कि लोकतंत्र में विकल्प बनने के लिए बेहतर होना पड़ता है। ये बद से बदतर होते जाने में ही विकल्प की संभावनाएं तलाश रहे हैं जबकि मुझे आशंका है कि इनकी नियति अब जड़ होते जाने की है। क्रोध,खीझ,ईर्ष्या और द्वेष से विकल्प नहीं बनता। विकल्प संयम और मानसिक संतुलन से बनता है जिसका अभाव इस नैरेटिव को बनाने वालों में है। इस तरह तो आप मोदी को नहीं हरा पाएंगे। आप इनऐक्टिव और डिस्ट्रकटिव हैं। एक समुदाय का तथाकथित नेता बोलता है कि जब मोदी और योगी चले जाएँगे तब आपको कौन बचाएगा ? सोच देखिये ...

अब किसी भी ब्रेकिंग न्यूज़ का कोई असर नहीं होता

बेलगाम स्थिति है। एक ब्रेकिंग न्यूज़ के बाद अगली आने में देर नहीं लगती। हृदय विदारक अपराध की ख़बर मात्र एक सूचना है और इस तरह की सूचनाएँ चौबीसों घंटे मिलती रहती हैं। सुनकर कोई असर नहीं होता। पूरा समाज पत्थर हो गया है। उसने मान लिया है कि यह तो होता ही रहता है।

जब तक अपराध की सज़ा सुनकर समाज की रूह नहीं काँपेगी तब तक अपराध पर लगाम नहीं लगेगी।

हिंदुस्तान में हर किस्म के अपराधियों का आतंक है। कानून का रत्ती भर आतंक किसी भी अपराधी पर नहीं है।

जाली कागज़ात, भ्रष्ट कर्मचारी और अधिकारी, लचर कानून, चौकी से कोतवाली तक अपराध, अदालतों में नाकारा बेहयाई, हद दर्जे के पार पहुंची लालच, नैतिक पतन की अनैतिक पराकाष्ठा हिंदुस्तान के हर घर की चौहद्दी में फल-फूल कर वट वृक्ष हो गई है।

प्रभुता और सत्ता के भूखे नेता सब कुछ खा जाने की होड़ में एक-दूसरे को पछाड़ने और आगे निकल जाने में अपने अहंकार की तुष्टि में लगे हैं। पार्षद से सांसद तक भ्रष्ट आचरण और गुंडई के कंधों पर सवार हैं।ग्राम प्रधान से तहसील के अधिकारी तक मवाद की वैतरणी में आकंठ डूबकर पाप की गठरी को अपनी धरोहर बनाने में लगे हैं।

भारतीय जीवन का कौन-सा क्षेत्र है जिसे कोई नागरिक अपने लिए सुरक्षित पा रहा है ? वह पाएगा भी कैसे, वह स्वयं अपने क्षेत्र को असुरक्षित बनाये हुए है। बड़े से बड़े और जघन्य अपराध को कराने के लिए प्रभुता और दबंगई ने नागरिक को राष्ट्र विरोधी कृत्य तक करने की आज़ादी दे रखी है।

सड़क हो या रेलमार्ग, असुरक्षित यात्रा का टिकट बिक रहा है। अप्रशिक्षित वाहन चालक यमराज बनकर सड़क पर हैं।

व्यापारी ज़हर बेच रहा है। चिकित्सक मुर्दों से वसूली में लगा है। वक़ील अपराधी के पक्ष में खड़ा है। पुलिस और बाबू अरबपति की कतार में ससम्मान खड़े हैं। अधिकारी और नेता करेंसी नोटों के गद्दों पर मसाज करा रहे हैं। पत्रकार और रचनाकार फेबर पाकर अनर्थ को अर्थ साबित करने में प्राण दिए जा रहे हैं।

मुफ्तखोरी ने मनुष्यता को डकार लिया है। सच तो यह है कि नैतिकता मर गई है और पुरुषार्थ शब्दकोश से बाहर आकर काहिल हो गया है।

बेलगाम बेहया और दुस्साहसिक गुंडे का भयमुक्त दुराचरण देखिए कि वह अपने घिनौने कृत्य का वीडियो स्वयं वायरल कर रहा है। सी सी टीवी कैमरा मिलावटी तेल बेच रहा है।

होटेल व्यवसाय कामातुरणाम भयं न लज्जा को गहना बनाए वासनाओं की प्रतियोगिता में निर्वस्त्र हुए स्वागत में खड़े हैं। हर जगह दलाल छाती पर तमगा लगाए राक्षस बने हुए हैं।

सड़क पर एक भी वाहन चालक ने किसी योग्य प्रशिक्षक से ड्रायविंग नहीं सीखी है। वह यमराज का दूत बनकर सड़क पर निकला है। आप बचें या मरें उसकी बला से। मदांध चालकों के अलावा गोपालक देश के दयालु लोगों द्वारा अपने गोवंश को आवारा छोड़कर यमदूतों की संख्या में इजाफा किया जा रहा है।

जर्जर भवनों में लोग रह रहे हैं। बच्चे पढ़ रहे हैं। आवासीय बस्तियों में विस्फोटक स्थिति पैदा करने वाले कारखाने चल रहे हैं। बेसमेंट में अवैध गतिविधियां चल रही हैं। पुल गिर और बह रहे हैं। आए दिन आग लग रही है। लोग मर रहे हैं। पथरीली सहानुभूति बह रही है। मुवावजा दिया जा रहा है। लोग मरें सैकड़ों की संख्या में, हजारों की संख्या में ; क्या फर्क पड़ता है। संवेदना प्रकट करना एक औपचारिकता है। इतनी आबादी किसलिए है ! यह मुल्क रहने लायक है। हमने ही इसे कुंभीपाक नरक की वैतरणी बना दिया है। हम सुधरेंगे तो देश सुधरेगा अन्यथा कोसते रहिए कि यह देश 2014 के बाद रहने लायक नहीं रहा।

यह अंक

'निकट' का यह अंक संस्मरण विशेषांक है। मैंने कोशिश की कि अंक की रचनाएँ परंपरागत संस्मरणों से अलग हों। रचनाकारों को मंतव्य बताते हुए उनसे संस्मरण की मांग की थी। समय भी चार-पाँच महीने का दिया था लेकिन जहां कुछ आकर्षक नामों ने संस्मरण नहीं भेजे वहीं कुछ ने बिना मंतव्य समझे और चार महीनों का धैर्य रखे तुरंत भेज दिये। ऐसे रचनाकारों को क्या कहा जाये जो पत्रिका के उद्देश्य को ताक पर रखकर रचना भेजने की जल्दी में रहते हैं। ऐसे रचनाकारों को क्या कहेंगे जो यह जानते हुए भी कि संस्मरण अंक है, उपन्यास अंश, आत्मकथा अंश और डायरी के पन्ने भेजने पर आमादा थे। ख़ैर, अब तो अंक आपके सामने है।

अगला अंक

अगला अंक निकट – 43 (जनवरी – अप्रैल 2026) उपहार अंक है। यह आत्मकथा प्रेम कथा विशेषांक होगा। निकट परिवार की ओर से नव वर्ष की हार्दिक शुभकामनाओं के साथ –

रचनाकारों के लिए

1. **रचनाएँ यूनिकोड में ही भेजें ।**
2. **जो सामग्री जितनी मांगी जाए उतनी ही भेजें।**
3. **अयामित सामग्री अनुपयुक्त होने पर अस्वीकृत समझी जाए।**

संपादक - निकट

पिछले अंक की प्रतिक्रिया

निकट-41, कहानियाँ भर नहीं

अशरफ अली

गहरे संकोच के बावजूद कि उस अंक के बारे में क्या लिखूं कि जिस में पिछले अंक की मेरे द्वारा की गयी समीक्षा प्रकाशित हुई हो, यहां संक्षेप में ही सही अपनी राय रखने का बड़ा कारण तो कभी मेरे सहकर्मी रहे सुभाष राय का दक्षिण भारत की दो स्वतंत्र-चेता स्त्रियों आंडाल और अक्क महादेवी-और भक्ति आंदोलन पर उनकी गहरी छाया पर विस्तृत विवेचनात्मक लेख ही था. वे इसके लिए साधुवाद के पात्र है. उन्होंने जिस तरह से उस समय को उसके अंतरविरोधों को और उनसे विकसित हो रहे आध्यात्मिक/ सामाजिक विमर्श को विश्लेषित किया है, वह महत्वपूर्ण है.

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence) ने हमारे समय में प्रभावी दस्तक दे दी है. उस पर एक ज़रूरी डिबेट जैसी चर्चा 'निकट 'के नये अंक को और मूल्यवान बनाती है. ख़ासकर युवा प्रतिभागियों की बेबाक राय, क्योंकि समय उनका ही है.

कहानियों पर चर्चा के पहले अंक में शामिल कवियों के बारे में. यतीन्द्र नाथ राही के गीत आत्मीय जीवन-प्रसंगों के सुख-दुख को स्वर देने के साथ ही सोशल मीडिया के सन्दर्भ को भी छूते चलते हैं. जय राम जय के नव गीत भी अच्छे बन पड़े हैं. पारुल तोमर और साधना मिश्रा की कविताओं में ग्रामीण परिवेश मुखर है.

संपादक कृष्ण बिहारी जी ने संपादक के सुख-दुख बयान करते हुए लेखकों की पाठकों से बढ़ती दूरी की जो निशानदेही की है और उसके जो हेतु निरदिष्ट किये हैं, उनसे सहमति के साथ अपनी राय रखते हुए कहना चाहूँगा कि चुनौतियाँ पहले भी थीं, आज भी हैं और आगे भी रहेंगी. कृत्रिम बुद्धिमत्ता और इस से उत्पन्न होने वाली अन्य जीवन-स्थितियाँ निश्चित रूप से चुनौतियों के नये आयाम गढ़ने जा रही हैं. इस दृष्टि से इस पर चर्चा लाज़िमन स्वागत योग्य है.

कहानियों का चयन तो 'निकट 'में स्तरीयता के पैमानों पर खरा रहता ही आया है. जीवन के विविध पक्ष यहाँ अपनी शिद्दत के साथ उपस्थित मिलते हैं. यह दृष्टि सम्पन्नता से ही संभव है. अपहरण (इला प्रसाद), हुड़क (प्रगति गुप्ता), अरन्य (रेणुका अस्थाना), प्रियंका गुप्ता की कहानी और बाबा लायन बनो ना (धनंजय सिंह) के अलावा चिनार के झड़ते पत्ते (डॉ गीता शर्मा) अमेरिका से लेकर अपने देश, बल्कि देस तक जटिल से जटिल तर होती जीवन-स्थितियों का चित्रण करती हैं. यहाँ परिवार के बुनावट में कश्मकश देखी जा सकती है और उसमें व्यक्ति की असहजता. अरन्य से एक उद्धरण-जीवन का सार बस यही है कि इसे प्यार और ईमानदारी से जी. तस्वीर (श्याम सुन्दर चौधरी) कुछ अलग सी है, सामर्थ्य पर भावुकता के हमले जैसी. रंजिश ही सही दिल को दुखाने के लिए आ (रत्ना श्रीवास्तव) अन्धविश्वास से गुज़रते हुए सत्य के सामने आने की कहानी है. इसके पीछे भी सामाजिक विकृतियाँ और अपने किये पापों का साया ही है जो पीछा नहीं छोड़ता, हालाँकि अंत बड़ा ही सुखद और सकारात्मक है.

गाँठ (गोविन्द उपाध्याय) और पिता की गंध (कल्पना मनोरमा) मनोग्रंथियों को खोलने के प्रयास जैसी है, पारिवारिक ताने-बाने की असहाजताओं के बीच. भरोसा (पूनम मनु) एक फोटो के बहाने आदिवासी जीवन के भोलेपन और फोटोग्राफर के मनो द्वन्द की कहानी है. भालचंद डिब्बेवाला (रंजना जायसवाल) व्यतीत को वर्त्तमान में खींच लाने की भावुक कोशिश है, जोकि दिल को छूती है.

लघु कथाएँ भी हैं, जैसी होती है. फिर भी कौशल पाण्डेय क़ी 'दूर दृष्टि', अशोक गुजरती की 'अहंकार 'और रमेश यादव की 'इबादत 'अच्छी बन पड़ी हैं.

अंत में संपादकीय के उत्तर-काण्ड से असहमति के साथ कहना चाहूँगा कि छात्र जीवन से ही जिस तुष्टिकरण का छाती -पीट रुदन सुनता चला आ रहा था और अपनी नासमझी के दिनों में इस पर कभी गुल -फुल हो लिया करता था, कुछ समझने के लायक़ हुआ तो पाया -

बहुत शोर सुनते थे पहलू में दिल का
जो चीरा तो इक क़तरा-ए-खूँ न निकला

मोबाइल – 9450635688